International Journal of Pedagogy, Health and Management research

Volume 2 Issue 1
June. 2026

e - ISSN - 3107-8389

Page No. 66- 69

DOI 10.5281/zenodo.21299719.

भारतीय साहित्य एवं कला में गौण एवं लोक देवी-देवता

Author-
डॉ. कविता मालवीय

Affiliation -
सहायक प्राध्यापक, इतिहास
शासकीय महारानी लक्ष्मी बाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल

Contact No.- +919039493179
Email Address-
ritika0046@gmail.com

Received on 25/06/2026
Accepted on 30/06/2026
Published on 30/06/2026

सारांश

भारतीय साहित्य और संस्कृति के ये लोक देवी-देवता अपने व्यक्तित्व व चमत्कारों से लोगों की आस्था और विश्वास को ज्वलंत बनाते और मुख्य देवी देवताओं की उस परिपाटी को पूर्णता देते हैं, जहां व्यक्ति स्वयं को निरीह और असुरक्षित महसूस नहीं करता। ऐसे ही लोक देव "हरदौल बाबा" के नाम से समूचे बुंदेलखंड में जाने जाते हैं, वहीं एक छोटे से ग्राम समनापुर खुर्द में "दरौन माई" अपने चमत्कारिक स्वरूप से प्रसिद्ध लोक सेवी के रूप में प्रचलित हैं।

मुख्य शब्द :परंपरागत, लोकगाथाएं, निष्कलंकता, अविरल, लांछित, लोकमुख।

International Journal of Pedagogy, Health and Management Research
(IJPHMR) e- ISSN- 31078389

भारतीय साहित्य एवं कला में गौण एवं लोक देवी देवता : भारत भूमि जहां आस्था और विश्वास की गंगा अविरल बहा करती है। इस धरती ने महान-संतों, कवियों, कलाकारों और महापुरुषों को जन्म दिया, जिनकी वाणी, मन और कर्म का सौंदर्य यहां के चप्पे चप्पे में सुगंध की तरह समाया हुआ है, जिसकी महक ने विश्व के कोने कोने तक पहुंचकर, विश्व समुदाय को अपनी ओर आकृष्ट किया है।

आस्था और विश्वास की इस डोर ने ही भारत के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी परंपराओं और मूल्यों से जोड़ रखा है। जहां व्यक्ति भोले भाव से नीम तले मां की स्नेहिल छाया का अनुभव करता है, नदियों को मां और पर्वतों को हिमालय गोवर्धन के रूप में पूजता है। गांवों की चौपालों पर बैठे, घटोई महाराज, शीतलामाता, करणीमाता, बड़ादेव, बूढ़ादेव आदि आदि सिर्फ उन गांवों तक ही सीमित नहीं रहते वरन अपनी सादगी, भोलेपन व चमत्कारों से शहरों की चकाचौंध को धूमिल करते, शहरों की भागभाग जीवन से लोगों को राहत पहुंचाते हैं।

भारतीय साहित्य और संस्कृति के ये लोक देवी देवता अपने व्यक्तित्व व चमत्कार से लोगों की आस्था और विश्वास को ज्वलंत बनाते और मुख्य देवी देवताओं की उस परिपाटी को पूर्णता देते हैं, जहां व्यक्ति स्वयं को निरीह और असुरक्षित महसूस नहीं करता।

ऐसे ही एक लोक देव हरदौल बाबा के नाम से जाने जाते हैं।

सरमन, रानी गणेशकुंवर और हरदौल से संबंधित विविध लोकगाथाएं प्रचलित हैं। लाला हरदौल को देवता की भांति पूजा जाता है। गांव गांव में इनके चबूतरे बने हुए हैं। ओरछा के राजा जुझारसिंह ने विष-मिश्रित भोजन कराकर हरदौल की हत्या करा दी थी। उन्होंने हंसते हंसते विष मिश्रित भोजन करके निष्कलंकता का परिचय दिया था। मृत्यु के पश्चात भी बाबा हरदौल ने अपनी बहन कुंजा के प्रार्थना किये जाने पर मानजी के विवाह में सम्मिलित होकर विवाह को निर्विघ्न संपन्न कराया था।

"कुंजा जाय चेतका रोई, तुम बिन भैया और न कोई"
जे मैया, भैया खौं मारे, तिन पै गाज पर जइयौ,
नजरिया के सामने तुम हरदम लाला रइयौ।।

चित्र 1: हरदौल की प्रतिमा, फूलबाग ओरछा

बुंदेलखंड के विवाहों में हरदौल की पूजा अनिवार्यतः होती है। हरदौल की समाधि ओरछा का सर्वप्रमुख पर्यटन आकर्षण है। यह देशी एवं विदेशी पर्यटकों के मध्य समान रूप से लोकप्रिय है। बुंदेलखंड के निवासियों के लिए तो यह समाधि एक पवित्र तीर्थ की तरह है।

हरदौल कौन थे? हरदौल, ओरछा के यशस्वी शासक वीरसिंह देव की पत्नी गुमान कुंवरि से उत्पन्न पुत्र थे। गुमान कुंवरि, खैरवार के सामंत प्रभारसिंह की पुत्री थीं। गुमान कुंवरि के चार पुत्रों, दिमान हरदौल, भगवंतराय, किशुनसिंह तथा चंद्रभान एवं एक पुत्री कुंCurrent कुंवरि (कुंजकुंवरि) का उल्लेख मिलता है।

हरदौल की जन्म तिथि विवादग्रस्त है। कुछ विद्वानों ने ओरछा रिकॉर्ड दरूरत पृ. 255 के आधार पर उन्हें सं. 1665 माघ वदी 2 शनिवार रात्रि 09 बजे माना है।

वीरसिंह देव ने हरदौल को बड़गांव की जागीर प्रदान की थी। हरदौल का विवाह दुर्गापुर के जागीरदार लाखनसिंह परमार की पुत्री हेमंत कुंवरि से सं. 1685 में हुआ था।

हरदौल के जीवन चरित्र के बारे में लोकमुख में कई तरह की जनश्रुतियां प्रचलित हैं। नर्मदाप्रसाद गुप्त ने एक प्रचलित वर्णना का उल्लेख अपने ग्रंथ 'बुंदेलखंड की लोक संस्कृति का इतिहास' में किया है। वे लिखते हैं, "बुंदेली लोकमानस

के लोकमुख में एक वर्णना जो बहुत प्रचलित है, इस प्रकार चलती है–

ओरछा नरेश जुझार सिंह की पत्नी अपने देवर हरदौल से बहुत अधिक प्रेम करती थीं और हरदौल भी भौजी को माता की तरह मानते थे। जुझार सिंह के मुगल दरबार या मुगल सेना में रहने पर हरदौल ही ओरछा का राजकाज संभालते थे। वे न्यायप्रियता, सत्यवादिता, वीरता आदि गुणों के कारण काफी लोकप्रिय हो गए थे। इस कारण ईर्ष्यालु दरबारियों और मुगल प्रतिनिधि ने मिलकर राजा के कान भरे और देवर-भौजी के विशुद्ध प्रेम को अनैतिक और लांछित बताया। शक की कोई दवा नहीं होती, फलस्वरूप राजा ने रानी के पतिव्रत धर्म की परीक्षा लेनी चाही, और उसे देवर को विष देने के लिए विवश किया। रानी ने विष मिश्रित भोजन हरदौल को परोसा, पर उनकी आंखें बरस पड़ीं। पूछने पर उन्होंने सच्ची बात बता दी। अब हरदौल के प्रेम की परीक्षा थी और उसमें वे सोलह आने खरे उतरे। भोजन करने पर उनके प्राण पखेरू उड़ गए।"

ओरछा स्थित हरदौल की बैठक मंदिर स्तंभ में हरदौल की मृत्यु तिथि सं. 1688 अंकित है।

इतिहास के ग्रंथों में हरदौल की चर्चा नहीं के बराबर है और जनश्रुतियों में भरी पड़ी है। यहां यह तथ्य ध्यातव्य है कि कोई भी जनश्रुति अकारण प्रचलित नहीं होती, अवश्य उनका कोई न कोई आधार होता ही है, मुश्किल है कि एक ऐतिहासिक तथ्य रूपी वृक्ष पर कथाओं, उपकथाओं की अमरबेलें ऐसी लिपटी होती हैं, कि वृक्ष को खोजना किसी के वश की बात नहीं है। चूंकि हरदौल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं, और बुंदेलखंड अंचल में एक लोक देवता के रूप में उन्हें जो सम्मान प्राप्त है, उसे देखते हुए यह घटना सत्य के ज्यादा निकट प्रतीत होती है। जिनका प्रमाणित रूप बुंदेलखंड के प्रत्येक घर परिवार में शादी ब्याह व हर शुभ अवसर पर हरदौल बाबा की पूजा अर्चना की जाती है।

इसी श्रृंखला में एक अन्य लोक प्रचलित देवी जो आस्था और विश्वास का अटूट पर्याय बनकर लोगों में प्रचलित हैं, "दरौन माई" के नाम से जानी जाती हैं। ग्राम समनापुर खुर्द, तहसील गौहरगंज थाना मंडीदीप के रायसेन जिले में एवं भोजपुर विधानसभा के अंतर्गत मंडीदीप के समीप करीब 9 कि.मी. पश्चिम में यह गांव बेतवा नदी के तट पर स्थित है। इसी गांव के समीप झीरी महादेव स्थल है जहां से बेतवा नदी का उद्गम स्थान है। जिसकी दूरी मंदिर से मात्र सात कि.मी. है।

समनापुर गांव में लगभग 100 परिवारों की आबादी है, जिसमें सभी समाजों के लोग निवासरत हैं, जिसमें दरोई जाति के लोगों भी निवास करते थे। "दरोई ये गौंड जनजाति की ही एक उपजाति है। जो दरीन माई के नाम पर अधिक विकसित हुई। सिवनी मालवा में दरौन माई को अन्य नामों से जाना जाता है"।

जनश्रुतियों के अनुसार इस गांव में दरोई जाति की अविवाहित महिला रहती थी, जिनमें कालांतर में स्वतः ही ऐसी सिद्धियों का विकास हुआ, जो भी व्यक्ति उनके पास अपनी परेशानी लेकर पहुंचता, वह उन परेशानियों को बखूबी हल कर दिया करती थीं, बताया जाता है कि बरसों तक वह जीवित रहीं और जहां उनका देहावसान हुआ, उसी स्थान पर एक कच्चे चबूतरे का निर्माण कर, एक पत्थर की मूर्ति रूप में उन चमत्कारी देवी की पूजा अर्चना की जाने लगी, एक नीम का पेड़ भी लगाया गया।

कालांतर में उनके परिजन उक्त स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर जा बसे, किंतु दरौन माता के कुटुंबियों में जिनकी भी मृत्यु होती वहां (माता की मूर्ति के समीप) एक पत्थर की मूर्ति रख दी गई।

उक्त स्थान पर जो भी व्यक्ति अपनी किसी भी प्रकार की समस्या को सच्चे मन से लेकर जाता है, उसकी समस्या का निदान होता है।

कुछ समय पूर्व एक तेली समाज के व्यक्ति को किसी आपराधिक प्रकरण में फंसाया गया, वह "दरौन माता" के चरणों में गया, दूसरे दिन ही उसे कोर्ट से जमानत मिली और जल्द ही वह निर्दोष साबित हुआ, उनके परिजन आज भी माता के स्थान पर शीश नवाते हैं।

गांव के लोगों का विश्वास बढ़ता गया, अनेकों अनेक ऐसे उदाहरणों की चर्चा होती हैं उनका यह कार्य हुआ उनका वह कार्य हुआ, यहां तक कि, लोगों की मवेशियां गुम हो जाती थीं, सब जगह ढूंढने के पश्चात उक्त स्थान पर माथा टेकते ही, मवेशियां पीछे से रंभाती हुई आ जाती हैं, ऐसा लोगों ने प्रत्यक्ष देखा है। मानो पूरा का पूरा गांव ही माता की स्नेहिल छांव में सुरक्षित हो।

कुछ समय पूर्व एक 7-8 साल के बालक को दरौन माई ने बूढ़ी मां के रूप में साक्षात दर्शन दिये, कोई वस्तु उस बालक के हाथ में रख आशीर्वाद दिया और सदैव सदाचारी और भलाई के रास्ते पर चलने की सीख दी साथ ही उस बालक से कुछ 5-10 पैसों की मांग की जो वह बालक सबसे छिपाकर एकत्रित किया करता था, बालक आश्चर्य में था, पर बूढ़ी मां के कहने पर वह जैसे ही पैसे लेने अपने घर के दरवाजे की ओर मुड़ा, बूढ़ी मां वहां से अंतर्ध्यान हो गईं। बालक ने पूरे गांव में बूढ़ी मां को ढूंढा बाद में स्वप्न में माता ने अपने होने का अहसास कराया और कहा बस मैं तेरे देने की मंशा देखना चाहती थी। कालांतर में माता के आशीर्वाद से वह बालक आज इंटेलिजेंस ब्यूरो भोपाल में उपपुलिस अधीक्षक के पद पर पदस्थ है। जिन्होंने उस कच्चे चबूतरे को वर्तमान स्वरूप दिया।

वैसे तो किसी भी दिन कोई भी व्यक्ति देवी की पूजा कर सकता है। प्रसाद, नारियल व सत्यनारायण भगवान की कथा श्रद्धानुसार, मांसाहारी लोग बकरी (पाठ) की बलि देकर भी मान करते हैं। विशेष पूजा यहां पर माघ और चैत्र, बैसाख के माह में होती है।

चमत्कारिक स्वरूप लिए यह मंदिर व स्थान मुझे तनिक विचलित करता है, जब यहां, लड़कियों या महिलाओं को मंदिर में प्रवेश नहीं दिया जाता। माता शक्ति का रूप लिए "दरौन माई" का वो सात्विक आशीर्वाद वो स्नेहिल अहसास से हम क्यों वंचित हैं? यह प्रश्न मेरे अंतर्मन में बार-बार उठता है, यह इच्छा आज मैं भी दरौन माई से करती हूँ।

संदर्भ :

1. श्री दुर्गेश दीक्षित द्वारा, टीकमगढ़ की लोकसंस्कृति के अंतर्गत 'टीकमगढ़ दर्शन' से पृष्ठ 151-152
2. राजरत्न उइके के शोध प्रबंध "म.प्र. के बुंदेलखंड अंचल के पर्यटन स्थलों का ऐतिहासिक अध्ययन" पृष्ठ 138
3. लक्ष्मण सिंह गौर, ओरछा का इतिहास, ओरछा 1985-86 पृष्ठ 73-74
4. नर्मदा प्रसाद गुप्त, बुंदेलखंड की लोक संस्कृति का इतिहास, नई दिल्ली 1995, पृ. 314
5. कामिनी, श्यामसुंदर सोनिकिया, श्यामबिहारी श्रीवास्तव, सीता किशोर, बुंदेलखंड की पूर्व रियासतों में पत्र पांडुलिपियों का सर्वेक्षण, कानपुर 1994 ई. पृ. 20
6. भगवानदास श्रीवास्तव, लाला हरदौल का विषपान, भोपाल, द्वितीय संस्करण, 2006 पृ. 714
7. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पूर्वोक्त पृष्ठ 315
8. मुकेश कुमार धुर्वे, सिवनी मालवा, तहसील ग्राम फरीदपुर, जिला होशंगाबाद (राजगोंड जनजाति के)
9. एल.एन. मालवीय (रिटायर्ड पोस्टमास्टर)
10. बी. आर. मालवीय, उपपुलिस अधीक्षक, इंटेलिजेंस, भोपाल